REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 10 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2020

भारतीय चित्रकला का इतिहास और शैलियां

Kashinath D.W.
Lecturer, Dept. of Studies in Visual Art, Gulbarga University, Kalburgi.

सारांशः

भारतीय चित्रकला के शुरुआती उदाहरण प्रागैतिहासिक काल के हैं, जब मनुष्य गुफाओं की दीवारों पर पेंटिंग कर रहे थे। भीमबेटका गुफाओं में पेंटिंग ५५०० ईसा पूर्व की हैं। अजंता और एलोरा की गुफाओं की ७वीं शताब्दी की पेंटिंग, ७वीं शताब्दी से भी पुरानी, भारतीय चित्रकला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। भारत में चित्रकला का इतिहास बहुत पुराना है। मानव ने पाषाण युग में गुफाओं को चित्रित करना शुरू कर दिया था। होशंगाबाद और भीमबेटका क्षेत्रों में गुफाओं और गुफाओं में मानव चित्रण के साक्ष्य मिले हैं। इन चित्रों में शिकार, मानव समूह शिकार, महिलाओं और जानवरों, पक्षियों आदि के चित्र मिले हैं। अजंता की गुफाओं में पेंटिंग कई शताब्दियों में बनाई गई थी, जिनमें से सबसे पुरानी ई.पू. की है। पहली सदी से है।

परिचयः

भारतीय चित्रकला के शुरुआती उदाहरण प्रागैतिहासिक काल के हैं, जब मनुष्य गुफाओं की दीवारों पर पेंटिंग कर रहे थे। भीमबेटका गुफाओं में पेंटिंग ५५०० ईसा पूर्व की हैं। अजंता और एलोरा की गुफाओं की ७वीं शताब्दी की पेंटिंग, ७वीं शताब्दी से भी पुरानी, भारतीय चित्रकला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। भारतीय चित्रकला में प्राचीन काल से लेकर आज तक भारतीय संस्कृति की भाँति एक विशेष प्रकार की एकता देखी जा सकती है। प्राचीन और मध्यकाल में भारतीय चित्रकला मुख्य रूप से धार्मिक भावनाओं से प्रेरित थी, लेकिन आधुनिक समय तक यह अधिक धर्मनिरपेक्ष जीवन का प्रतिनिधित्व करती है। आज, भारतीय चित्रकला लोककथाओं के विषयों का प्रतीक है।

भारतीय कला में भारतीय चित्रकला की एक लंबी परंपरा और इतिहास है। प्राचीनतम भारतीय पेंटिंग प्रागैतिहासिक काल की रॉक पेंटिंग हैं, भीमबेटका रॉक शेल्टर जैसी जगहों पर पाए जाने वाले पेट्रोग्लिफ्स के साथ, भीमबेटका रॉक शेल्टर में पाए जाने वाले कुछ पुरापाषाणकालीन रॉक पेंटिंग लगभग ३०,००० साल पुराने हैं। भारत में बौद्ध साहित्य सैन्य महलों और अभिजात वर्ग के ग्रंथों के उदाहरणों से भरा हुआ है, लेकिन अजंता गुफा चित्र जीवन जीने में सबसे महत्वपूर्ण हैं। पांडुलिपियों में छोटे और बड़े चित्र भी इस अवधि के दौरान प्रचलित थे, हालांकि सबसे पुराने जीवित चित्र मध्ययुगीन काल के हैं। मुगल चित्रकला पुरानी भारतीय परंपराओं के साथ फारसी लघुचित्रों के मिश्रण को दर्शाती है, और १७वीं शताब्दी के बाद से इसकी शैली सभी धर्मों के भारतीय संस्थानों में फैल गई है, प्रत्येक एक स्थानीय शैली विकसित कर रहा है। ब्रिटिश शासन के दौरान, ब्रिटिश ग्राहकों के लिए कंपनी पेंटिंग की जाती थी, जिन्होंने १९वीं शताब्दी से पश्चिमी शैली में कला विद्यालय भी शुरू किए, जिससे आधुनिक भारतीय चित्रकला की ओर अग्रसर हुआ, जो तेजी से अपनी भारतीय जड़ों की ओर लौट रहा है। भारतीय पेंटिंग एक सौंदर्य निरंतरता प्रदान करती है जो प्रारंभिक सभ्यता से लेकर आज तक

फैली हुई है। प्रारंभिक दिनों में मुख्य रूप से धार्मिक होने से, भारतीय चित्रकला विभिन्न संस्कृतियों और परंपराओं का मिश्रण बनने के लिए वर्षों से विकसित हुई है।

भारतीय चित्रकारिकी शैलियां:

भारतीय चित्रकला को मोटे तौर पर भित्ति चित्रों और लघुचित्रों में विभाजित किया जा सकता है। भित्ति चित्र गुफाओं की दीवारों पर चित्र हैं, उदाहरण के लिए अजंता की गुफाएँ और एलोरा में कैलाशनाथ मंदिर। दक्षिण भारत में बादामी और सित्तनवासल में भी भित्ति चित्रों के सुंदर उदाहरण मिले हैं। कागज या कपड़े पर छोटी मात्रा में लघुचित्र बनाए जाते हैं। बंगाल के पाल शासकों को लघुचित्र प्रस्तुत करने का श्रेय दिया जाता है।

भारतीय चित्रों को मोटे तौर पर भित्ति चित्र और लघुचित्र के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। अजंता की गुफाओं और कैलाशनाथ मंदिर जैसी कंक्रीट की दीवारों पर भित्ति चित्र प्रमुख कार्य हैं। छोटे चित्र खराब होने वाली सामग्री जैसे कागज और कपड़े पर बनाए जाते हैं जो किताबों या एल्बम के लिए बहुत छोटे होते हैं। बंगाल के पाल भारत में लघु कला के अग्रदूतों में से एक थे। मुगल काल के दौरान, लघु चित्रकला ने गौरव प्राप्त किया। राजस्थान में पेंटिंग के विभिन्न स्कूलों जैसे बांदी, किशनगढ़, जयपुर, मारवाड़ और मेवाड़ के चित्रकारों ने लघु चित्रों की परंपरा को आगे बढ़ाया। ब्रिटिश शासन के दौरान ब्रिटिश ग्राहकों के लिए पेंटिंग बनाने वाली कंपनी रागमा पेंटिंग्स भी इसी स्कूल की है।

प्राचीन भारतीय कला ने 1930 के दशक में बंगाल स्कूल ऑफ आर्ट का उदय देखा, इसके बाद यूरोपीय और भारतीय शैलियों में विभिन्न प्रयोग किए गए। भारत की स्वतंत्रता के बाद, ज़मीन रॉय, एम.एफ हुसैन, फ्रांसिस न्यूटन सोज़ा और वासुदेव एस. गायतोंडे जैसे महत्वपूर्ण नए कलाकारों ने कई नई कला शैलियों का विकास किया। जैसे–जैसे अर्थव्यवस्था आगे बढ़ी, वैसे–वैसे कला के रूप और शैलियाँ भी। 1990 के दशक में, भारतीय अर्थव्यवस्था को उदार बनाया गया और वैश्विक अर्थव्यवस्था में एकीकृत किया गया ताकि सांस्कृतिक जानकारी अंदर और बाहर स्वतंत्र रूप से प्रवाहित हो सके। कलाकारों में सुबोध गुप्ता, अतुल डोडिया, देवज्योति रे, बोस कृष्णमाचारी और जितिश कहलत शामिल हैं जिनकी कला की अंतरराष्ट्रीय बाजार में नीलामी हो चुकी है। भारती दयाल ने पारंपरिक मिथिला पेंटिंग को बहुत ही समकालीन तरीके से संभालने के लिए चुना है और उनकी कल्पना के प्रयोग से उनकी शैली ताजा और असामान्य दिखती है।

- **अजंता की गुफाए:**

इन गुफाओं के निर्माण में लगभग 1000 वर्ष लगे। अधिकांश गुफाओं का निर्माण गुप्त काल में हुआ था। अजंता की गुफाएं बौद्ध धर्म की महायान शाखा से संबंधित हैं।

- **एलोरा की गुफाएं:**

हिंदू गुफाओं में सबसे प्रमुख आठवीं शताब्दी का कैलाश मंदिर है। यहां जैन धर्म और बौद्ध धर्म की गुफाएं भी हैं।

- **बाघ और एलीफेंटा गुफाएं:**

बाघ गुफाओं की थीम वैश्विक जीवन से जुड़ी हुई है। यहां के संगीत और नृत्य के चित्र बहुत ही आकर्षक हैं। पुर्तगालियों ने हाथी की मूर्ति का नाम एलीफेंटा रखा था।

- **जैन शैली:**

इसके केंद्र राजस्थान, गुजरात और मालवा थे। देश में जैन शैली में सर्वप्रथम ताड़ के पत्तों के स्थान पर कागज का प्रयोग चित्रकला के लिए किया जाता था। इस शैली में जैन तीर्थंकरों के चित्र बनाए गए थे। इस शैली पर फारसी शैली का प्रभाव भी स्पष्ट है। नासिर शाह (1500–1510) के शासनकाल के दौरान, मांडू में चित्रित पांडुलिपि ने लिखावट में एक नया मोड़ लिया।

- **पाल शैली:**

यह शैली बंगाल के पाल वंश के शासकों के शासनकाल के दौरान 9वीं–12वीं शताब्दी के दौरान विकसित हुई। इस शैली का विषय बौद्ध धर्म से प्रभावित था। चित्रकला की इस अनुकरणीय शैली का नेपाल और तिब्बत की चित्रकला पर भी बहुत प्रभाव पड़ा।

- **मुगल शैली:**

चित्रकला की मुगल शैली भारतीय, फारसी और मुस्लिम के मिश्रण का एक विशिष्ट उदाहरण है। अकबर के शासनकाल के दौरान भारत में लघु चित्रकला के क्षेत्र में नए युग की शुरुआत हुई। अपने समय के सबसे अच्छे उदाहरणों में से एक हमज़ानमा था। मुगल चित्रकला अपने नाटकीय कौशल और तूलिका की गहराई के लिए प्रसिद्ध है। जहाँगीर स्वयं भी एक अच्छे चित्रकार थे। उन्होंने अपने चित्रकारों को चित्र और दरबार के दृश्य बनाने के लिए प्रोत्साहित किया। उस्ताद मंसूर, अब्दुल हसन और बिशनदास उसके दरबार के सर्वश्रेष्ठ चित्रकार थे। शाहजहाँ के शासन काल में चित्रकला के क्षेत्र में अधिक कार्य नहीं हुआ था, क्योंकि उसे स्थापत्य और स्थापत्य में अधिक रूचि थी।

- **राजपूत चित्रकला शैली:**

१८वीं शताब्दी में राजपूताना राज्यों में चित्रकला की राजपूत शैली का विकास हुआ। इन राज्यों में एक विशिष्ट प्रकार की चित्रकला शैली का विकास हुआ, हालांकि इनमें कुछ समान तत्व हैं जिन्होंने इसे राजपूत शैली का नाम दिया। यह शैली पूरी तरह से हिंदू परंपराओं पर आधारित है। रागमाला से संबंधित चित्र इस शैली में बहुत महत्वपूर्ण हैं। यह शैली मुख्य रूप से लघुचित्रों से बनी थी। राजपूत चित्रकला की एक अनूठी विशेषता आकृतियों की व्यवस्था है। सूक्ष्म आकृतियों को भी स्पष्ट रूप से चित्रित किया गया है। यह शैली कई शाखाओं में विकसित हुई–

- ✓ **मालवा शैली:** मालवा शैली अपने चमकीले और गहरे रंगों की विशेषता है। रसिकप्रिया मालवा शैली के चित्रों की प्रमुख श्रंखला है।
- ✓ **मेवाड़ शैली:** मेवाड़ शैली की पृष्ठभूमि आमतौर पर लंबी और वास्तुकला से भरपूर होती है।
- ✓ **बीकानेर शैली:** बीकानेर शैली के अधिकांश कलाकार मुसलमान थे। यह शैली अपने सूक्ष्म और मंद रंगों के लिए प्रसिद्ध है।
- ✓ **बूंदी शैली:** इस शैली में स्त्री सौंदर्य को दर्शाने के लिए कुछ नियम स्थापित किए गए थे।
- ✓ **कोटा शैली:** कोटा शैली बूंदी शैली के समान है। विरल जंगलों में शिकार करने वाले शेरों और तेंदुओं के चित्र इस शैली में विश्व प्रसिद्ध हैं।
- ✓ **एम्बर शैली:** एम्बर शैली के चित्र समृद्ध हैं और इनमें विभिन्न प्रकार के विषय हैं लेकिन उनमें सूक्ष्मता का अभाव है।
- ✓ **किशनगढ़ शैली:** इस शैली की विशेषता उच्च माथा, धनुषाकार भौहें, तेज उभरी हुई नाक, पतले संवेदनशील होंठ और उभरे हुए चीकबोन्स वाली महिला होती है।
- ✓ **मारवाड़ शैली:** चित्रकला की इस शैली में पगड़ी की कुछ विशेषताएं हैं। रंगों के संयोजन में चमकीले रंगों का बोलबाला है।
- ✓ **पहाड़ी चित्रकला शैली:** इस कला में दर्शाए गए वृक्षों की संरचना पर नेपाली चित्रकला का बहुत प्रभाव है। कृष्णा गाथा पहाड़ी चित्रकारों के बीच बहुत लोकप्रिय है। बसौली शैली, गढ़वाल शैली, जम्मू शैली और कांगड़ा शैली पहाड़ी चित्रकला शैली की उप–शैलियाँ हैं।

- **बंगाल शैली:**

बंगाल की चित्रकला शैली का विकास 20वीं शताब्दी की शुरुआत में ब्रिटिश शासन के दौरान हुआ। यह भारतीय राष्ट्रवाद से प्रेरित एक शैली थी, लेकिन कई शौकिया ब्रिटिश प्रशासकों द्वारा भी इसे प्रोत्साहित किया गया था। रवींद्रनाथ टैगोर के भतीजे अबनिंद्रनाथ टैगोर इस शैली के पहले चित्रकार थे। उन्होंने मुगल शैली के

प्रभाव में कई सुंदर चित्र बनाए। टैगोर की सबसे प्रसिद्ध कृति भारत–माता थी जिसमें भारत को एक हिंदू देवी के रूप में चित्रित किया गया था। 1920 के बाद भारतीय राष्ट्रवाद के उदय के बाद इस शैली में गिरावट आई।

- **आधुनिक शैली:**

औपनिवेशिक काल में भारतीय कला पर पश्चिम का प्रभाव पड़ने लगा। इस काल में अनेक चित्रकार हुए जिन्होंने भारतीय विषयों को पाश्चात्य परिप्रेक्ष्य और यथार्थवाद की आड़ में खूबसूरती से चित्रित किया। जेमिनी रॉय जैसे कलाकार भी थे जिन्होंने इस काल में लोक कला से प्रेरणा ली। भारतीय स्वतंत्रता के बाद, प्रगतिशील कलाकारों ने स्वतंत्र भारत के लिए अपनी आकांक्षाओं को व्यक्त करने के लिए नए विषयों और माध्यमों को चुना। इस समूह के छह प्रमुख चित्रकार के.एच. आगा, एस. का। बकरी, एच। ए। गाडे, एम। एफ। हुसैन, एस. एच। रज़ा और एफ. एन। सूजा शामिल थे। 1956 में समूह को भंग कर दिया गया था, लेकिन कुछ ही समय में इसने भारतीय चित्रकला को पूरी तरह से बदल दिया।

इस काल के प्रसिद्ध चित्रकारों में से एक अमृता शेरगिल थीं जिन्होंने एक नई भारतीय शैली का निर्माण किया। अन्य महान चित्रकारों में गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर और रविवर्मा शामिल हैं। वर्तमान प्रसिद्ध चित्रकारों में बाल छाबड़ा, वी.एस. गायतोंडे, कृष्णन खन्ना, रामकुमार, तैयब मेहता और अकबर पदमसी। जहर दासगुप्ता, प्रदास कर्माकर और बिजन चौधरी ने भी भारतीय कला और संस्कृति के संवर्धन में योगदान दिया है।

- **तंजौर पेंटिंग:**

तंजौर पेंटिंग मूल रूप से तमिलनाडु के तंजौर शहर की शास्त्रीय दक्षिण भारतीय पेंटिंग का एक महत्वपूर्ण रूप है। कला का रूप 9वीं शताब्दी की शुरुआत में है, जिसमें चोल शासकों का वर्चस्व था, जिन्होंने कला और साहित्य को बढ़ावा दिया। ये पेंटिंग अपने लालित्य, समृद्ध रंगों और विस्तार पर ध्यान देने के लिए जानी जाती हैं। इनमें से अधिकांश पेंटिंग हिंदू देवताओं और हिंदू पौराणिक कथाओं के दृश्यों पर आधारित हैं। आधुनिक समय में, दक्षिण भारत में त्योहारों के दौरान स्मृति चिन्ह के रूप में इन चित्रों की अत्यधिक मांग है। तंजौर पेंटिंग बनाने की प्रक्रिया में कई चरण होते हैं। पहले चरण में आधार पर छवि का प्रारंभिक स्केच बनाना शामिल है। आधार में लकड़ी के आधार से जुड़ा एक कपड़ा होता है। चाक पाउडर या जिंक ऑक्साइड को फिर पानी में घुलनशील चिपकने के साथ मिलाया जाता है और बेस पर लगाया जाता है। आधार को चिकना करने के लिए, कभी–कभी एक हल्के अपघर्षक का उपयोग किया जाता है। पेंटिंग हो जाने के बाद, छवि के आभूषणों और कपड़ों को अर्ध–कीमती पत्थरों से सजाया जाता है। गहनों को सजाने के लिए भी फीता या धागे का उपयोग किया जाता है। उस पर सोने की पन्नी चिपकी हुई है। अंत में, चित्रों में रंग जोड़ने के लिए रंगों का उपयोग किया जाता है।

- **पैचिट्रा:**

पट्टाचित्र पूर्वी भारत में पश्चिम बंगाल और ओडिशा के शास्त्रीय चित्रों को संदर्भित करता है। संस्कृत में, श्पट्टश का अर्थ है श्विज्ञानश या श्कपड़ाश और श्चित्रश का अर्थ है चित्र। बंगाल पैचचित्र पश्चिम बंगाल की पेंटिंग को संदर्भित करता है। यह पश्चिम बंगाल की पारंपरिक और पौराणिक विरासत है। बंगाल पचचरित्र को दुर्गापत, चलचित्र, आदिवासी पटचित्र, मेदिनीपुर पटचित्र, कालीघाट पटचित्र आदि जैसे कुछ अलग–अलग पहलुओं में विभाजित किया गया है। बंगाल पचचरित्र के विषय ज्यादातर पौराणिक, धार्मिक कहानियां, लोककथाएं और सामाजिक हैं। कालीघाट पट्टचित्र, बंगाल पट्टचित्र की अंतिम परंपरा जैमिनी रॉय द्वारा विकसित की गई है। बंगाल पटचरित्र के कलाकार को पटुआ कहा जाता है। उड़ीसा पट्टाचित्र की परंपरा भगवान जगन्नाथ की पूजा से निकटता से जुड़ी हुई है। खंडगिरि और उदयगिरि और छठी शताब्दी ईस्वी के सीताभिंजी भित्ति चित्रों पर चित्रों के खंडित साक्ष्य के अलावा, ओडिशा में सबसे पुराने स्वदेशी चित्र चित्रकारों द्वारा चित्रित किए गए हैं (चित्रकारों को चित्रकार कहा जाता है)। उड़िया चित्रकला का विषय वैष्णववाद के इर्द–गिर्द घूमता है। भगवान जगन्नाथ जो भगवान कृष्ण के अवतार थे, पट्टाचार संस्कृति की शुरुआत से ही प्रेरणा थे। पट्टा चित्र के विषय ज्यादातर पौराणिक, धार्मिक और लोक कथाएं हैं। विषय मुख्य रूप से भगवान जगन्नाथ और राधा–कृष्ण, जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा, मंदिर की गतिविधियों, जयदेव के श्गीता गोविंदाश पर आधारित विष्णु के दस

अवतार, कुजरा नबा गुंजारा, रामायण, महाभारत के विभिन्न ष्वेशष हैं। देवी–देवताओं के व्यक्तिगत चित्र भी चित्रित किए जा रहे हैं। चित्रकार कारखाने के लिए पोस्टर रंगों के अलावा सब्जी और खनिज रंगों का उपयोग करते हैं। वे अपने रंग खुद बनाते हैं। सफेद रंग शंख के खोल से पाउडर बनाने, उबालने और छानने की एक बहुत ही खतरनाक प्रक्रिया में बनाया जाता है। इसके लिए बहुत धैर्य की आवश्यकता होती है। लेकिन यह प्रक्रिया रंग को चमक और प्रभुत्व देती है। हिंगुला एक खनिज रंग है जिसका उपयोग लाल रंग के लिए किया जाता है। पीले पत्थर तत्वों के राजा श्हरितालश, एक प्रकार का नीला श्रामराजश नीले रंग के लिए प्रयोग किया जा रहा है। वे नारियल के टॉप को जलाकर शुद्ध दीपक–काले या काले रंग का प्रयोग करते हैं। इन श्चित्रकारोंश द्वारा उपयोग किए जाने वाले ब्रश भी स्वदेशी हैं और इनमें पालतू बाल होते हैं। बाँस की छड़ी के सिरे से बंधे बालों का एक गुच्छा ब्रश बनाता है। यह वास्तव में आश्चर्यजनक है कि कैसे ये चित्रकार इस कच्चे ब्रश की मदद से ऐसी सटीक रेखाएँ खींचते और पूरा करते हैं। उड़िया चित्रकला की पुरानी परंपरा अभी भी पुरी, रघुराजपुर, परलाखेमुंडी, चिकिटी और सोनपुर के चित्रकारों (पारंपरिक चित्रकारों) के हाथों में जीवित है।

सारांशः

जैसे–जैसे इन चित्रों का बाजार बढ़ता गया, कलाकारों ने हिंदू देवताओं की नीरस छवियों से खुद को मुक्त करना शुरू कर दिया और अपने चित्रों में समकालीन सामाजिक जीवन को चित्रों का विषय बनाने के तरीके खोजने लगे। यह कला फोटोग्राफी की प्रवृत्ति, पश्चिमी थिएटर कार्यक्रमों, ब्रिटिश औपनिवेशिक प्रशासन द्वारा बनाई गई बंगाल की 'बाबू संस्कृति' और कोलकाता के नव निर्मित अमीर लोगों की जीवन शैली से भी प्रभावित थी। इन सभी प्रेरक तत्वों ने मिलकर बंगाली साहित्य, नाटक और दृश्य कला को एक नया विचार दिया। कालीघाट पेंटिंग इस सांस्कृतिक और सौंदर्य परिवर्तन के दर्पण के रूप में उभरी। हिंदू देवी–देवताओं पर आधारित पेंटिंग बनाने वाले कलाकारों ने अब नर्तकियों, अभिनेत्रियों, दरबारियों, भव्य बाबुओं, रंग–बिरंगे कपड़ों में पिल्लों, उनके बालों की स्टाइलिंग और धूम्रपान पाइप और सतार बजाने के दृश्य दिखाना शुरू कर दिया है। कालीघाट के चित्र बंगाल में कला के प्रथम उदाहरण माने जाते हैं।

संदर्भः

1. HISOUR, कला सांस्कृतिका इतिहास, आभासी दौरे, कलाकृति प्रदर्शन, डिस्कवरी इतिहास वैश्विक सांस्कृतिक ऑनलाइन.
2. भारतीय चित्रकला, ज्ञानोदय इंडिया, २०२१
3. भारतीय चित्रकला, जागरण जोश, २०२१
4. चित्र के छह अंग (रवीन्द्रनाथ ठाकुर की व्याख्या)" - मूल से १३ दिसंबर २००४ को पुरालेखित. अभिगमन तिथि १२ दिसंबर २०१४.